परमात्म ज्योति स्वरूप को सबने स्वीकारा

विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। सभी मानते हैं, परमात्मा एक है। सर्वशक्तिवान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिंदु स्वरूप है। इस सम्बन्ध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद है, स्वरूप के सम्बन्ध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है। क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। शिवलिंग का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों(जो कि प्राकृतिक रूप से प्रकाशवान होते हैं) के बनाये जाते थे। क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिंदु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार से मान्यता दी गई है।

श्री राम ने भी शिव की पूजा की

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्री राम ने भी की है। जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। परमात्मा शिव श्रीराम के भी आराध्य है। यदि श्रीराम भगवान होते तो इन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई! वे जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्म शिव की तपस्या करके ही प्राप्त की थी।

शंकर जी भी लगाते हैं शिव का ध्यान

हम शंकर जी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में ही देखते हैं। इससे स्पष्ट है कि उनके भी कोई आराध्य या देव हैं जिनका ये स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव शंकर के भी रचयिता हैं, वे शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्ध नेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से करवाई पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता

सर्वशक्तिवान निराकार शिव की पूजा अर्चना की। और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई, उसके पश्चात् युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वे सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

निराकार, निर्वैर, सतनाम

सिक्ख धर्म में गुरुनानक देव जी ने कहा है, एक ओंकार निराकार। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम है, जिसको काल कभी नहीं खा सकता' यह सब महिमा गुरबाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा, उन्होंने निराकार, निर्वैर, सतनाम कहा। गुरु नानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

नूर-ए-इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर ए इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम व ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना तेज। अतः सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में इस परम सत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। इसके अलावा विश्व भर में सभी वेद-शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथों आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योति स्वरूप की व्याख्या की है। वही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता, परमपिता परमेश्वर परमात्मा शिव हैं।

गॉड इज़ लाइट

जीसस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है।

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिवान परमात्मा शिव की महिमा गाई है। जहाँ श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले ज्ञानेश्वर के रूप में तो श्रीराम ने भी रावण से युद्ध के पहले रामेश्वरम में शिवलिंग की पूजा की। गुरबाणी में कहा है, एक ओंकार निराकार, तो मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा। जिसस ने कहा गॉड इज़ लाइट। इसी तरह निराकार ज्योतिर्लिंगम परमात्मा का यादगार स्मरण सभी धर्मों में किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार, सृजनहार, पालनहार वही परमसत्ता परमात्मा ही हैं।

परमात्मा शिव को प्रसन्न करने के लिए लें पाँच संकल्प

परमपिता परमात्मा शिव जिन्हें भोलेनाथ भी कहते हैं, वे इतने भोले हैं कि वे हमसे कोई वस्तु, वैभव नहीं लेते अपितु हममें निहित कड़वाहट, बुराइयों, कमियों को हमसे लेकर हमें सुख, शांति, वैभव का जीवन प्रदान करते हैं। इसी के यादगार स्वरूप हर मनुष्य आत्मा महाशिवरात्रि पर शिवलिंग पर कड़वे फल-फूल आदि अर्पित करते हैं। लेकिन परमात्मा को ऐसी कोई भी वस्तु नहीं चाहिए। उन्हें तो केवल हमारा सच्चा और साफ मन चाहिए। तो इस महाशिवरात्रि पर उन्हें भले आप कुछ अर्पित करें या ना करें किंतु उन्हें साक्षी मानकर निम्नलिखित पाँच संकल्प खुद से अवश्य करें और इसे सदा के लिए आत्मसात करें। इससे आप तो योग्य बनेंगे ही और परमात्मा शिव भी प्रसन्न होंगे और आपको हर मनइच्छित वर प्रदान करेंगे।

1. मन को साफ करो, औरों को माफ करो

कोई हमारी निंदा या विरोध करके अपने ऊपर पाप का बोझा या कर्मों का ऋण चढ़ाता, तो हमें उसे माफ कर देना है। उससे घृणा नहीं करनी, न ही उससे अपने मन को मैला करना है।

2. माया की गुलामी को सदा के लिए सलामी

हम मनुष्य आत्मायें माया की, अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के बंधक या गुलाम बने हुए हैं। इन्हीं विकारों के ऋण से छुटकारे के लिए इस त्योहार पर हम इससे मुक्ति पाने का संकल्प लें।

3. रूठना नहीं, रूठाना नहीं

वर्तमान समय हमारी आपात स्थिति है। इसलिए हमें न स्वयं दुःख पाना है, न दूसरों को दुःखी करना है, न रूठना है, न किसी को अपने से या शिव बाबा से रूठाने वाली बात कहनी है। सभी से दूध और चीनी की तरह मिलकर रहना है।

4. मायूसी, उदासी से मुख मोड़ो प्रभु से नाता जोड़ो

बेबसी को छोड़ा जाये और इसके लिए आत्मविश्वास किया जाये। क्योंकि आत्मविश्वास से ही भावना सुदृढ़ होगी। माया से पूर्णतः मुख मोड़कर प्रभु से नाता जोड़ा जाये। ये नाता अपनाने से ही सम्पूर्णता की प्राप्ति होगी तथा विकारों से मुक्त होंगे।

5. मन की सच्चाई, बुद्धि की सफाई

जिस प्रकार हम बाहरी सफाई पर ध्यान देते हैं, ऐसे ही इस शिवरात्रि पर हमें सच्चाई के साथ मन-बुद्धि की सफाई कर उसे स्वच्छ बनाना है।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

स्थानीय सेवाकेन्द्र